1961F Seth Hukum Chandra (of Indore)

Seth Hukum Chandra Ji (In Sanmati Sandesh, 1961)

स्व० सर सेठ हुकमचन्द्रजी, इंदौर

श्री पं० हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री

लगभग १५ वर्ष पूर्व की बात है। अनेक उपाधि विभूषित स्व० सर सेठ हुकमचन्द्रजी सा० अपने विद्वद्वर्ग और त्यागी वृन्द के साथ पूज्य श्री १०५ क्षु० गणेशप्रसाद जी वर्णी के दर्शनार्थ इन्दौर से सागर आए हुए थे। सौभाग्य से आने के दूसरे ही दिन सर सेठ सा० का जन्म-दिवस (आषाढ़ शुक्ला २ को) आ गया, अतएव जैन समाज की ओर से मोराजी भवन के विशाल प्रांगण में आपका जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। उत्सव का कार्यक्रम चल रहा था कि आपने २५०००) रु० पूज्य वर्णी जी के चरणों में यह कहते हुए समर्पित करने की घोषणा की—कि 'वर्णी'जी महाराज यह रकम जहाँ को चाहें दे देवें।' उपस्थित जनता ने उच्च करतल-ध्वनि से आपके इस दान की सराहना की। उसी वक्त की बात है कि तार लाने व्यक्ति ने एक तार लाकर सर सेठ सा० को दिया, जिसमें उस दिन के सोने का भाव ११३) रु० तोला लिखा हुआ था। तार बम्बई से आया था, अतः सर सेठ सा० ने अपने प्राइवेट सेक्रेटरी से कहा—तार देकर २५०००) तोला सोना खरीदने का आर्डर दे दो। तार दे दिया गया। भाग्य से मैं सर सेठ सा० के समीप ही बैठा था और यह सब देख सुन रहा था। कार्यक्रम के अनुसार सभा यथासमय विसर्जित हो गई।

यहाँ इतनी बात ज्ञातव्य है कि रात्रि का समय होने से पूज्य वर्णी जी महाराज सभा में नहीं आये थे। अतः जब आपको सर सेठ सा० के उक्त घोषित दान का पता चला, तो दूसरे दिन मन्दिर जी में प्रवचन के समय पूज्य वर्णीजी ने उपस्थित जनता को लक्ष्य करते हुए कहा—

'भैया, सर सेठ सा० ने तो अपना दान घोषित कर दिया और देने का भार मेरे पर छोड़ दिया, सो मुझे तो किसी संस्था से राग या द्वेष है नहीं; मेरे लिये तो सभी

[श्रीमंत सरसेठ हुकमचन्द जी]

संस्थायें बराबर हैं। यदि आप लोगों को उक्त रकम का राग हो, तो आप लोग इतनी ही रकम स्थानीय सस्था के लिए और देना स्वीकार कीजिए। कल इसी वक्त तक आप लोगों का निर्णय मुझे ज्ञात हो जाना चाहिए। यदि आप लोगों ने २५०००) रु० यहाँ की संस्था के लिए और एकत्रित कर लिया तो मैं उक्त रकम यहाँके लिए दे दूँगा, अन्यथा फिर जहाँ के लिए मेरे मन में आयेगा,—बाँट दूँगा।'

वर्णी जी के वचन सुनकर लोगों में काना-फूसी होने लगी, चर्चा जोर पकड़ गई और लोगों ने कहा कि यह दान की गई रकम को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। अतः स्थानीय जैन समाज को पच्चीस हजार का चन्दा एकत्रित करना आवश्यक है और यह कार्य कल इसी समय तक हो जाना चाहिए।

इसीदिन रात्रि के समय कटरा में सर सेठ साहब के सम्मान में सागर नगर-पालिका की ओर से सभा का आयोजन किया गया और नगर के प्रमुख लोगों के भाषणों के पश्चात् सर सेठ सा० को मानपत्र भेंट किया गया। आज की सभा के कार्यक्रम के मध्य में बम्बई का तार

सर सेठ सा० यों मिला—'सोने का भाव ११५) रु० तोला।' तुरन्त वापिसी तार दिया गया—'बेचो २५०००) तोला। भाग्य की बात, मैं आज भी समीप बैठा हुआ यह सब देख रहा था।

दूसरे दिन चौधरन बाई जी के मन्दिर में शास्त्र-सभा का आयोजन था। प्रवचन के पश्चात् पूज्य वर्णीजी ने लोगों से पूछा—'भैया, आप लोगों का क्या निर्णय रहा?' उपस्थित जनता ने उत्तर दिया—'महाराज, हम लोग चन्दा एकत्रित करेंगे और सर सेठ सा० द्वारा घोषित रकम सागर से बाहिर नहीं जाने देंगे।

बस फिर क्या था, चन्दा एकत्रित किया जाने लगा, इसी बीच सर सेठ सा० को बम्बई से तार मिला—'सोना २५०००) तोला बेचा ११४॥) में।' सर सेठ सा० ने तार पढ़कर रख लिया और लोगों के द्वारा जो रकमें लिखाई जा रही थीं, उन पर दृष्टिपात करते हुए अपनी स्वाभाविक मारवाड़ी बोली में बोले—सिंघई जी। (श्री कारेलाल कुन्दनलालजी को लक्ष्य कर) मेरे पास आइए—आपने जो एक हजार की रकम बोली है, वह बहुत कम है, पाँच हजार कीजिए। इतना कह कर और उपस्थित जनता को लक्ष्य करके सर सेठ सा० बोले—

'सुनो साव, शास्त्रों की बात तो ये पण्डित लोग जानें, मैं तो म्हाँरे अणुभव की बात कहूँ छूँ—दान देने से पैसा कदै (कभी) घटता नाहीं।'

सर सेठ सा० की यह स्वानुभवी बात सुनकर लोगों में एक अपूर्व जोश का संचार हुआ और बात की बात में पच्चीस हजार का चन्दा स्थानीय संस्था के लिए लोगों ने बड़े उत्साह के साथ लिखा दिया। पूज्य वर्णी जी ने भी अपना निर्णय घोषित करते हुए कहा भैया! आप लोगों ने तो यह रुपया अपने यहाँ ही खींच लिया।

ऊपर जो सर सेठ सा० ने अपने अनुभवकी बात कही थी—वह वैसे तो उनके जीवन भर के अनुभव से सम्बन्ध रखती है, क्योंकि ज्यों ज्यों सर सेठ सा० ने अपने जीवनमें दानों की उत्तरोत्तर वृद्धिकी, त्यों-त्यों ही उनकी धनराशि बढ़ती ही गई। पर आज जो उन्होंने बात कही थी—वह तो और भी तात्कालिक अनुभव की साक्षी दे रही थी—अर्थात् दो दिन पूर्व तब उन्होंने पच्चीस हजार रु० के दान की घोषणा की, टब उन्होंने ११३) के भाव में पच्चीस हजार तोला सोना खरीदा। दूसरे दिन उसे भाव के बढ़ जाने पर बेचने का आर्डर दिया जो कि ११४॥) के भाव से बिका। इस प्रकार सागर में रहते हुए पच्चीस हजार का दान करने के पश्चात् उन्होंने साढ़े सैंतीस हजार रु० कमाये।

'लक्ष्मी दानानुसारिणी' की उक्ति प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सार्थक कर सकता है।